International Journal of Enhanced Research in Management & Computer Applications
ISSN: 2319-7471, Vol. 6 Issue 8, August-2017, Impact Factor: 3.578

तुलसीदास में राम का मानवीयरूप

पूनम रानी

शोधार्थी, हिंदी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा

परिचय

तुलसीदास हिन्दी साहित्य के शिरोमणी कहलाते है। उसके पीछे यही कारण है कि उन्होंने कृष्ण की भांति राम को अवतारी कम और मानवीय अधिक दिखाया है। वे एक आदर्श भाई, बेटे, पती और राजा के रूप में दिखाई देते है। राम अवतारी रूप में राक्षसों का संहार करके सज्जनों की रक्षा करते है। अतः तुलसीदास के राम स्वरूप समाज के लिए अनुकरणीय है।

भक्ति शब्द भज् धातु में किन् प्रत्यय लगने से बनता है। किन प्रत्यय भाव अधिकरण और करण में प्रयुक्त होता है। प्रत्यय का अधिकरण में प्रयोग होने पर उन सभी दशओ की संज्ञा भक्ति होगी,जिनमें सेवा की जाता है। किन प्रत्यय के करण में प्रयुक्त होने पर सेवा साधक क्रियाओं को भक्ति कहेंगे। भज धातु में किन प्रत्यय लगने से भक्ति शब्द का अर्थ अनुराग ,श्रद्वा, सम्मान ,सेवा और पुजन है। भगवान के स्वरूप का अन्यय भाव से अनुभव व उसमें एकाकार हो जाना ही भक्ति है गीता में भगवान कृष्ण के अनुसार भक्ति का स्वरूप इस प्रकार बताया गया है कि महात्मा पुरूष देवताओं के स्वभाव का आश्रय लिए हुए मुझको अविनाशी तथा प्राणियों का आदि करण जानकर अन्यय भाव से भजते है ।

तुलसी की भक्ति

तुलसी भक्ति का सिद्वांत रूप में निरूपण करने वाले आचार्य नहीं थे बल्कि वे स्वयं में एक महान भक्त थे। तुलसी के विषय में यह मत उचित ही प्रतीत होता है कि वे आचार्य न होकर भक्त है। अतः अपने भावों की अभिवक्ति के समय वे इस बात के लिए विशेष सर्तक नहीं रहते है कि वे भक्ति का शास्त्रीय विवेचन कर रहे है जिस प्रकार तुलसी की राम कथा मंगल कराने और कलि मल हराने है। उसी प्रकार तुलसी की भक्ति का लक्ष्य भी मन के काम, क्रोध, मद, मोह आदि का नाश करना और गुणों में वृद्वि करना है।

भगवान का स्वरूप

तुलसी के राम के संदर्भ में आचार्य शुक्ल का मत तुलसी द्वारा निरूपित राम भक्ति में शामिल सामाजिक तत्वों कों सशक्त रूप में उदधाटित करता है। शुक्ल के मतानुसार भगवान का जो प्रतीक तुलसीदास ने लोक के सम्मुख रखा है, भक्ति का जो प्रकत आलंबन उन्होंने खडा किया है उसमें सोंदर्य, शक्ति और शील तीनों विभुतियों की प्रकष्टा है। तुलसी के सगुण राम का स्वरूप मात्र उसकी सकारता तक ही सीमित नहीं है अपितु उनके अपार गुण सर्वत्र परिवास है–

राम अमित गुण सागर थाह कि पावई कोइ।

भक्ति का स्वरूप

भक्ति का सिद्वान्ति निरूपण करने वाले विभिन्न आचार्य के अनुसार भक्ति के विभिन्न भेदापभेद स्वीकार किए है। भक्ति निरूपण ग्रन्थों में विभिन्न दृष्टि कोणों के आधार पर भक्ति के वर्गीकरण किए गए है। तुलसी ने भक्ति के विधि विधान मुलक साधनों को गौण और भक्त के मानसिक और आचारिक पवित्रता के साधनों को महत्व पूर्ण स्थान दिया है।

राम अवतार का स्वरूप

तुलसी ने राम अवतार के रूप में दो का समन्वय करने की विराट चेष्टा की है। वे ब्रहमतत्व को मानव तत्व से और मानव तत्व को ब्रहम तत्व से संयुक्त करना चाहते है तुलसी के राम एक साथ मानव भी है और ब्रहम भी। तुलसी ने राम के रूप में महत् की खोज की है। राम की महता उनकी दिव्य मानवता में निहित है। राम की महता में निहित दिव्यता के कारण ही वे मर्यादा पुरूष तथा राम है। तुलसी ने राम के रूप की उदभावना में परम्परा का पालन भी किया है।

राम का मानवीय रूप

तुलसी के राम में मानवीय गुण भी देखने को मिलते है। उनकी मानवीय रूप में राम अवतारी भी है वे देवताओ के शत्रु, दुष्ट राक्षसो के समुह जो पृथ्वी पर भार है उनको मारने के लिए तथा सज्जनों की रक्षा के लिए अनेक अवतार धारण करने वाले है। तुलसी के उपास्य राम शारिरिक और मानसिक आचारिक शुद्वि के आदर्श है। उनका आचार शील शक्ति और सौंदर्य के अंतर्गत आता है।

शील का अर्थ है – शुद्व आचाण । जिस व्यक्ति का आचरण शुद्व होता है वह स्वभाव ही हमारी श्रद्वा का पात्र बन जाता है। राम में शील की इतनी अधिकता है कि तुलसी उनके इस शील स्वभाव का चित्रण दिया है यह शब्द इतना व्यापक है कि उसमें चरित्र की सभी उज्जवल और उदार विशेषताओं का समावेश हो जाता है। राम सूर्य वंशी रूपी कमलों को खिलाने के लिए करोडो कामदेवो की छवी के समान सुंदर अपने प्रबल भुजदण्डो में धनुष बाण अतुल बलशाली है। लाल कमल के समान सुंदर जिनके नेत्र है जो सौंदर्य के भण्डार, जिनकी शरीर की काति सुंदर मेघ के वरण जैसी है।

इस प्रकार राम तुलसी के सभी मानवीय गुणो से परिपूर्ण है। राम की अलोकिता में लौककिता और लौकिकता के भीतर अलौकिता का समावेश है। तुलसी जी ने अपने साहित्य में राम के रूप में जीवन के उच्चावेशो के साकार मानवीय रूप की मनोरम कल्पना की है।

संदर्भ

[1] आचार्य रामचन्द्र शुक्ल,गोस्वामी तुलसीदास पृ0 43
[2] राम चरित्र मानस, पृ0 7,92
[3] डॉ हरवंश लाल शर्मा, विनय पत्रिका, सम्पादक डॉ यश गुलाटी, हिन्दी के श्रेंष्ठ काव्यो का मुल्यांकन, पृ0 140
[4] राम चरित्र मानस 1,9
[5] राम चरित्र मानस 1,42,3